## गहन निर्वाहन कृषि

गहन निर्वाहन कृषि वह कृषि पद्धति है जिसमें प्रधानतः खाद्य फसलों का उत्पादन स्थानीय उपभोग के लिए होता है। इस कृषि पद्धति में विश्व की एक-तिहाई जनसंख्या संलग्न है तथा अपना जीवन-निर्वाह करती है। इतनी जन-संख्या के भरण-पोषण के लिये पर्याप्त खाद्यान्न उत्पन्न करने के लिए इस कृषि का गहन स्वरूप स्वाभाविक है। गहन निर्वाहन कृषि मानसून एशिया में केन्द्रित है। इस कृषि की निम्नलिखित विशेषतायें हैं—

(1) इस कृषि में फसलों का पशुपालन की अपेक्षा अधिक महत्त्व होता है। फसलों में भी खाद्य फसलों की प्रधानता होती है। खाद्यान्नों में चावल का सर्वप्रथम स्थान है। जहाँ भी पर्याप्त वर्षा होती है वहाँ चावल के उत्पादन को प्राथमिकता दी जाती है। शुष्क भागों में गेहूँ, जौ, ज्वार-बाजरा पैदा किये जाते हैं। खाद्यान्नों के अतिरिक्त अन्य विविध फसलें भी न्यूनाधिक मात्रा में उगायी जाती हैं।

(2) इस कृषि में पशुओं का स्थान गौण होता है पर पशुओं की संख्या अपेक्षाकृत अधिक पायी जाती है। पशुपालन का प्रमुख उद्देश्य उनसे मांस या दूध प्राप्त करना नहीं, बल्कि कृषि-कार्यों में उनका उपयोग करना होता है। चरागाह के लिये कोई अलग व्यवस्था नहीं पायी जाती। कृषि के लिए अनुपयुक्त भूमि ही चरागाह का काम देती है। पशुओं का मुख्य भोजन खाद्यान्न का डंठल एवं भूसा है। भार ढोने के लिये घोड़े, ऊँट, खच्चर भी पाले जाते हैं। भेड़-बकरियाँ भी पाली जाती हैं जिनसे थोड़ा-बहुत मांस का उत्पादन होता है। कृषि में सहायक होने के अतिरिक्त इन पशुओं के गोबर से खाद भी प्राप्त होती है।

(3) इस कृषि को अन्य प्रकार की कृषि से अलग करने वाली प्रमुख विशेषता कृषि-पद्धति की है। इसमें श्रम का अधिकाधिक उपयोग होता है। श्रम की तुलना में पूंजी की लागत कम होती है। मशीनों का उपयोग नगण्य है। खेती में प्राचीन काल से प्रचलित साधारण लकड़ी अथवा लोहे के हल-कुदाल से जुताई-गुड़ाई की जाती है। रासायनिक खादों का बहुत कम व्यवहार होता है पर गोबर-राख जैसे खादों का अधिकतम लाभ उठाया जाता है। खेतों की जुताई, गुड़ाई, निराई बड़ी गहन होती है तथा कृषि के हर पक्ष पर किसान अधिकतम ध्यान देता है। इस प्रकार की कृषि-पद्धति सदियों की पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचित ज्ञान एवं अनुभव पर आधारित है। यद्यपि इस कृषि में प्रति एकड़ उपज अन्य आधुनिक वैज्ञानिक ढंग से की जाने वाली कृषि की अपेक्षा कम होती है तथापि प्रति एकड़ लागत के अनुपात में अधिकतम उत्पादन होता है। जहाँ कहीं पानी की सुविधा प्राप्त है साल में दो या तीन फसलें एक ही खेत से पैदा की जाती है। उनके बोने काटने का समय एवं उनको खाद-पानी की आवश्यकताओं में बड़ा सूक्ष्म सामंजस्य होता है। विभिन्न प्रकार की फसलें एक साथ इस ढंग से भी बोयी जाती हैं कि वर्षा की अनुचित मात्रा में घट-बढ़ होने पर भी कोई न कोई फसल अच्छी हो जाती है। सारांश यह कि किसान कम से कम लागत से खेत से अधिकतम

उत्पादन करने के लिए तथा मौसम की प्रतिकूलता से बचने के लिए हर-सम्भव प्रयत्न करता है। इस प्रकार यह विश्व की सबसे गहन कृषि-प्रणाली है।

(4) इस कृषि प्रदेश में खेत अत्यन्त छोटे-छोटे तथा बिखरे होते हैं। किसी भी किसान के सभी खेत एक जगह नहीं मिलते। सभी किसान एक गाँव में रहते हैं तथा उनके खेत गाँव के चारों ओर बिखरे रहते हैं। इसके कारण भी उत्पादन कम होता है। अनगिनत मेड़ों में जमीन का काफी नुकसान होता है, सिंचाई में बाधा पहुँचती है तथा खेत की जुताई एवं देख-भाल में अधिक असुविधा होती है एवं समय का अपव्यय होता है। अब कई देशों में चक-बन्दी द्वारा इस समस्या का निवारण किया जा सकता है।

(5) इस कृषि में किसान-परिवार के जीवन निर्वाह भर को भी कठिनाई से उत्पादन हो पाता है। किसान अधिकतर वही अन्न खाते हैं जो पैदा कर सकते। जो अन्न या शाक-सब्जी उत्पन्न नहीं कर पाते। उसे खाने में असमर्थ रहते हैं। पैदावार का थोड़ा अंश बेचकर वे अपने कपड़े एवं अन्य आवश्यक वस्तुएँ खरीदते हैं जो अन्न किसान बेचते हैं वह स्थानीय नगरों में ही खप जाता है। अतः इस कृषि प्रदेश से अन्न का निर्यात प्रायः नहीं होता प्रत्युत् अधिकतर देश अभाव में विदेशों से आयात करते हैं।

(6) इस कृषि प्रदेश में किसानों की दशा सामान्यतः दयनीय होती है। प्रति एकड़ उत्पादन कम होने के कारण किसान का जीवन-स्तर नीचा होता है। किसान गाँवों में मिट्टी, फूस एवं खपरैल के मकानों में रहते हैं। कृषि में मशीन, खाद, अच्छे बीज आदि के विनियोग के लिए उनके पास पर्याप्त पूँजी नहीं है। कोई ऐसी व्यवस्था भी नहीं है जिससे उन्हें साधारण ब्याज एवं अनुकूल शर्तों पर ऋण मिल सके। किसानों को ऋण के लिये ग्रामीण महाजनों पर निर्भर रहना पड़ता है जो किसान के खेत की जमानत पर तथा अत्यधिक ऊँचे सूद पर कर्ज देते हैं। इस प्रकार किसान ऐसे दुश्चक्र में फँसे रहते हैं जिससे निकलना आसान नहीं होता। इस प्रकार कृषि-व्यवसाय में लगे लोगों की आय अन्य किसी व्यवसाय में लगे लोगों की आय से बहुत कम होती है। नगरों में मिलने वाली सुविधाओं—सड़क, बिजली आदि से भी किसान सर्वथा वंचित रहते हैं।

गहन निर्वाहन कृषि प्रदेश को भी दो वर्गों में विभाजित किया है—(1) चावल-प्रधान गहन निर्वाहन कृषि तथा (2) चावल-विहीन गहन निर्वाहन कृषि। इन दोनों प्रदेशों में गहन निर्वाहन कृषि की सभी सामान्य विशेषताएँ मिलती हैं परन्तु केवल फसलों में भेद मिलता है। चावल-प्रधान कृषि में चावल ही सर्वप्रमुख फसल होती है। दूसरे प्रदेश में भी चावल थोड़ा बहुत उत्पन्न हो सकता है पर अन्य फसलों की प्रधानता होती है। चावल-प्रधान कृषि को **सावा कृषि** (Sawha agriculture) भी कहते हैं जबकि दूसरे प्रदेश को **शुष्क-खेत कृषि** (Dry field agriculture) कहना अधिक उचित है।

इन दोनो प्रकार की कृषि में फसल के विभेद के अनुसार उत्पादन-पद्धति में भी थोड़ी भिन्नता मिलती है। चावल-प्रधान कृषि में खेत में पानी भरकर उसमें धान रोपा जाता है अतः यह अधिक वर्षा तथा सिंचाई की सुविधा वाले क्षेत्रों में ही मिलती है। जहाँ वर्षा कम होती है तथा सिंचाई की सुविधा नहीं है वहाँ चावल की जगह अन्य फसलें उगायी जाती हैं जिनके लिए कम पानी की आवश्यकता होती है। जिन क्षेत्रों में 100 सेमी० से कम वर्षा होती है वहाँ इसी प्रकार की खेती होती है। 40 सेमी० से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में सिंचाई की सहायता से भी शुष्क-खेत-कृषि ही होती है। सावा कृषि में चावल सर्वप्रधान फसल है। एक साल में दो या तीन बार भी एक ही खेत से धान की फसल उगायी जाती है परन्तु शुष्क-खेत कृषि में किसी एक फसल की प्रधानता नहीं है। इसमें वर्षा की मात्रा में भिन्नता के अनुसार कहीं गेहूँ, ज्वार-बाजरा, कपास आदि फसलों में किसी भी फसल की प्रधानता हो सकती। इसके अतिरिक्त एक साथ ही कई फसलें साधारणतः उगायी जाती हैं। गेहूँ तथा ज्वार, बाजरा के साथ-साथ चना, जौ, दलहन तथा तेलहन फसलें भी उगायी जाती हैं। इस पद्धति में वर्षा की मात्रा में घट-बढ़ होने का कुप्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि इनमें कोई न कोई फसल अच्छी उपज जाती है। भारत में अधिकतर खरीफ तथा रबी दो प्रकार की फसलें उगायी जाती हैं। जो फसलें वर्षा ऋतु में बोयी जाती हैं तथा वर्षा समाप्त होते-होते काट ली जाती है उन्हें **खरीफ** कहते हैं। जो शरद ऋतु में बोयी जाती हैं तथा ग्रीष्म ऋतु के आरम्भ में काट ली जाती है उन्हें **रबी** कहते हैं। पंजाब, ऊपरी गंगा मैदान तथा मध्य गंगा मैदान में कपास, गेहूँ, जौ, चना, गन्ना, उड़द, अरहर आदि दलहन, तेलहन तथा कुछ धान उपजाते हैं। पठारी भागों में ज्वार, बाजरा, रागी तथा कपास प्रमुख हैं। एक ही साथ विविध फसलें उगाने के लिये अनुकूल तापमान की आवश्यकता होती है अतः उत्तरी चीन में जहाँ जाड़े में अधिक ठंडक पड़ती है इसके लिये

कठिनाई उत्पन्न हो जाती है। शुष्क-खेत कृषि में गन्ना, कपास आदि नकदी फसलों का (Cash crops) महत्वपूर्ण स्थान होता है। चावल वाले प्रदेशों की तरह यहाँ भी पशुओं का महत्व गौण होता है परन्तु यहाँ भैंस की जगह बैल, ऊँट आदि हल जोतने के काम में लाये जाते हैं। शुष्क-खेत कृषि में वर्षा की कमी तथा अनियमितता के कारण प्रति एकड़ उत्पादन अपेक्षाकृत कम होता है परन्तु जहाँ सिंचाई की सुविधा है, उत्पादन अधिक होता है। भारत तथा चीन में सिंचाई के विस्तार से उत्पादन बढ़ाने की बहुत सम्भावना है।